International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 6, June 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

भारतीय वैचारिक परम्परा में पर्यावरण चिन्तन, एक सर्वेक्षण

डा0 शशी नोटियाल
एसो0 प्रो0 एवं विभागाध्यक्ष
इतिहास विभाग,
जे0वी0जैन डिग्री कालेज
सहारनपुर (उ0प्र0)

सारांश

कोई भी राष्ट्र कोई भी समाज अपनी संस्कृति का विकास अपने कुछ मूल विचारों के आधार पर करता है। प्रस्तुत शोध आलेख भारतीय संस्कृति के एक मूल विचार के उसकी अन्तर्वस्तु सहित उद्घाटन का प्रयास है।

भारत का एक विचार अनादि काल से ही प्रकृति के प्रति अभिन्नता की दृष्टि, प्रकृति और पर्यावरण के प्रति श्रृद्धा एवं कृतज्ञता के भाव का रहा है। यहाँ यह रेखांकित करना भी समान रूप से महत्वपूर्ण है कि इस दृष्टिकोण में प्रायः निरन्तरता बनी रही है और यह दृष्टिकोण भारतीय इतिहास में कई धाराओं, रूपों, धर्म व दर्शन, साहित्यिक वाग्मय, वास्तुकला, मूर्तिकला और चित्रकला में प्रतिबिम्बित होता रहा है।

जैसे सिन्धु घाटी सभ्यता की मातृदेवी हो या आदि शिव के रूपाकार देवता की प्रतिमा हो, या फिर वैदिक ऋषियों द्वारा अपनी ऋचाओं में प्रकृति पूजा की प्रवृत्ति हो जो सुप्रसिद्ध गायत्री मन्त्र के रूप में 'सवितृ' अर्थात सूर्य देव के प्रति उपासना के रूप में व्यक्त हुई या जल स्त्रोतों और नदियों के प्रति पवित्रता की मनोदशा में विकसित हुंई। महान भारतीय ग्रंथ गीता में श्रीकृष्ण स्वयं को एक वृक्ष घोषित करते हैं कि वृक्षों में भी मैं हूँ। महाकाव्यों में माँ पार्वती हिमालय (एक प्रसिद्ध

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 6, June 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

पर्वत) की पुत्री घोषित की गयी। ना केवल वैदिक धर्म में अपितु बौद्ध एवं जैन धर्म में भी पर्यावरण चेतना परिलक्षित होती रही है। जैन तीर्थंकरों ने अहिंसा, करूणा की ना केवल मानव जाति अपितु पशु पक्षी एवं वृक्षों के प्रति भी प्रकट किया है।

मध्य युग में भक्ति काव्य में मानव और मानवेत्तर पर्यावरण दोनों के प्रति अत्यन्त भावप्रेरण दृष्टिकोण अपनाया गया था। भारत का सदैव सम्पूर्ण विश्व को यह सन्देश रहा ''मानव'' को ''पर्यावरण'' के प्रति मैत्री व सदभाव का दृष्टिकोण रखते हुए 'विकास' करना होगा।

दर्शनशास्त्र का उद्देश्य उन मौलिक प्रश्नों पर व्यवस्थित रूप से विचार करना होता है, जिनका सम्बन्ध सामान्य मानव के आचरण से तथा हम जिस जगत में निवास करते है उससे है। किसी संक्रान्तिकाल में, जैसा कि हमारा युग है, खतरा और आश्वासन दोनों ही होते हैं। उदाहरण के लिए आज वे कौन से तथ्य हैं जो विज्ञान को, इस विश्व को विध्वंस करने की धमकी देते हैं[1] ?

लगभग अर्ध शताब्दी पूर्व पश्चिम के सुप्रसिद्ध दर्शन शास्त्री जार्ज टामस व्हाइट प्रैट्रिक जब इन शब्दों को लिख रहे थे तो आप यूरोपियन पुनर्जागरण और प्रबोधन के बाद से पश्चिम द्वारा अपनाये गये ''विकास के मॉडल एवं दृष्टिकोण'' के दोहरे स्वरूप को रेखांकित कर रहे थे।

दरअसल सतरहवीं शताब्दी के उपरान्त यूरोपियन राष्ट्रों द्वारा एशिया, अफ्रीका और अमेरिका में औद्योगिक क्रान्ति की शक्ति का उपनिवेश निर्माण में अनुपयोग किया गया और मानव के विकास की एक नवीन कथा लिखने के भारी भरकम दावे उनके द्वारा किये गये थे, लेकिन पिछले कुछ वर्षो में समाचारों का शीर्षक रही मानव जाति की कुछ चुनौतियों को देखें।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 6, June 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

1– पिछले वर्षो में गर्मी बढ़ती जा रही है और जमीं हुई बर्फ पिंघल रही है और ग्लेशियर टूट रहे है। इससे समुद्रों का जल स्तर बढ़ता जा रहा है। वैज्ञानिकों को इसके साथ ही यह भय है कि यदि धुएं से निर्मित कार्बन उत्सर्जन का शिलाओं पर जमाव होता रहा तो भविष्य में नई बर्फ जमना कठिन होगा।

2– पिछले दो दशकों से समुद्र के जल स्तर में प्रतिवर्ष लगभग दस मिली0 की दर से जो वृद्धि हो रही है, उसका एक कारण नदियों एवं समुद्र में अनेक गैर पुनः चक्रणीय अवशिष्टों का संचय होता जा रहा है। जैसे मानव द्वारा कैरी बेग व पैकिंग में पाली पैक का प्रचुरता से प्रयोग हुआ।

3– प्लास्टिक प्रदूषण परिवर्तित होते समय के साथ अधिक भयावह होता जा रहा है। भूमि से लेकर नदियों, समुद्रों तक में आज पॉलिथिन बैग, प्लास्टिक की खाली बोतलों की भरमार है, जो जीव जन्तुओं व मानव स्वास्थ्य के लिए अत्यन्त हानिप्रद है।

4– मानव द्वारा जल के अन्धाधुन्ध अनावश्यक प्रयोग के कारण आज भूगर्भ जल स्तर भी गिरता जा रहा है, जिसके परिणाम स्वरूप मानव जाति के समक्ष मूलभूत जीवन आवश्यकता स्वच्छ पेयजल का संकट विकराल हो जायेगा।

5– तथा अभी वर्ष 2019 में ही शीतकाल में पश्चिमी उत्तर प्रदेश तथा भारत की राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र सहित देश के कई भूभागों में धुन्ध एवंकोहरा छाया रहा। साँस की एलर्जी एक गम्भीर समस्या के रूप में प्रगट हुई।

6– आपने अन्तिम बार गिद्ध कब देखा था ? क्या हमें पता है कि पृथ्वी से कई जीव जन्तु व वृक्ष प्रजातियां विलुप्त हो रही हैं। आस्ट्रलियाई सरकार ने आधिकारिक रूप से आस्ट्रेलिया के छोटे भूरे चूहेको 2019 में ही विलुप्त प्रजाति के रूप में सूचीबद्ध किया है।

7–मानवीय क्रियाकलापों से कार्बन उत्सर्जन में असाधारण वृद्धि हुई है, जिससे महासागरीय अम्लीकरण अर्थात समुद्री जल के पी0एच0 मान में निरन्तर कमी आ रही है। इससे

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 6, June 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

महासागरों केजल द्वारा कार्बन–डाई–आक्साइड का अत्याधिक अवशोषण कर लिया गया है। यह स्थिति महासागरों में पायी जाने वाली कोरल, इचिनोडर्म तंत्र को और अंततः मानव को प्रभावित करेगी।[2]

सुप्रसिद्ध विज्ञान जर्नेल ''साईंस में प्रकाशित'' ''समरी फार पॉलिसी मेकर्स'' वैश्विक मूल्यांकन रिपोर्ट के अनुसार विश्व के कार्बन उत्सर्जन का 60 प्रतिशत भाग समुद्र में संचित हो रहा है, जो भूमि से लगभग दोगुणा क्षेत्रफल है।[3]

8– वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण, मृदा प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण यानि मानवीय अस्तित्व के ईर्द–गिर्द प्रदूषण और प्रदूषण में निरन्तर वृद्धि कई असाध्य जटिलताओं को उत्पन्न कर रही है।

9– ''ओजोन लेयर'' जो पृथ्वी की अंतरिक्ष के अनेक हानिप्रद विकिरणों से रक्षा करती रही है, उसमें छिद्र हो गया है, जिसके परिणाम स्वरूप पृथ्वी पर मानवीय अस्तित्व को अत्याधिक भयानक रेडिएशनों से ग्रसित होने का भय हैं।

10– जलवायु परिवर्तन के परिणाम स्वरूप दक्षिणी अमेरिकी देश चिली की राजधानी में स्थित आकुलियों झील नक्शें से गायब हो गयी है।[4]

11– भारत के पर्वतीय राज्य हिमाचल की राजधानी शिमला भयंकर जल संकट से जूझ रही है, वहां आवश्यकता 4.5 करोड़ लीटर जल की है, जबकि उपलब्धता 2.2 करोड़ लीटर जल की है।

इस प्रकार कठिन होते मानव जीवन का यह एक भयावह पक्ष है। इससे जो परिदृश्य सामने आ रहा है, उसके मूल कारणों को यदि आप खोंजतें हैं तो आप पाते हैं मनुष्य का प्रकृति संरक्षण के प्रति उदासीनता भाव व ''उदंड विलासिता पूर्ण उपभोग शैली'' इन समस्याओं के लिए बड़ी सीमा तक उत्तरदायी हैं, जिससे पृथ्वी का ''पारिस्थितिकी तंत्र'' अत्याधिक दबाव में आ गया है।[5]

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 6, June 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

दरअसल प्रकृति ने ऐसा तंत्र तैयार किया है, जहां सभी जीवधारियों की पूरी श्रेणी आहार व अस्तित्व के लिए परस्पर निर्भर है। इस पूरी श्रृंखला में मानव जो सर्वाधिक महत्व पूर्ण स्थान रखता था, परन्तु मानव ने विवेक व आत्म नियंत्रण खो दिया। परिणाम स्वरूप हमने पिछले कुछ वर्षों में ही जीव जंतुओं व पेड़ पौधों की 80 लाख प्रजातियां विलुप्त होते देखा है और लगभग दस लाख प्रजातियां ऐसी है जो विलुप्त होने की सीमा पर है। इसका एक अर्थ यह भी है कि हमने परिस्थितिकी तंत्र में महत्वपूर्ण प्रजातियों को खो दिया है। इतनी जागरूकता और तमाम अभियानों के बाद 2019–20 के हमने कई प्रजातियों को हमेशा के लिए खो दिया है। साथ ही इसका एक अर्थ यह समझा जाना चाहिए कि यदि मानव नें वर्तमान में पर्यावरण के प्रति अपना दृष्टिकोण नहीं बदला तो एक दिन पृथ्वी ग्रह से मानव भी विलुप्त हो सकता है।

पर्यावरण एवं परिस्थिति

आज इक्कीसवीं शताब्दी में ''मानव जाति'' ने विकास व उपभोग का जो मॉडल अपनाया हुआ है, उसमें प्राकृतिक संसाधनों के अतिशय दोहन के चलते, वैश्विक स्तर पर परिस्थितिकी का विनाश हो रहा है, जिसका परिणाम मानव का भविष्य अंधकारमय हो सकता है। अतः ''धरणीय विकास या सतत विकास'' (SUSTAINABLE DEVLOPMENT) की अवधारणा वर्तमान में अत्याधिक महत्वपूर्ण मानी जा रही है। मानवीय अस्तित्व के समक्ष विलुप्त होने की चुनौती के चलते इस अवधारणा को आज वर्तमान विश्व में अत्याधिक महत्वपूर्ण स्वीकार किया गया है। संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा इस सन्दर्भ में पहल कर **''ब्रंटलैण्ड आयोग''** का गठन किया गया था।[6]

ब्रंटलैण्ड आयोग ने विश्व के आर्थिक विकास को प्रोत्साहित करने और पारिस्थितिकी विनाश को रोकने के विरोधाभास का समाधान खोजने का प्रयास किया।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 6, June 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

उसके समक्ष मुख्य चुनौती 'औद्योगिक विकास की समृद्धता और पारिस्थितिकी पर्यावरण तंत्र के मध्य सुखद व लाभदायक समन्वय खोजने की थी।'

ब्रंटलैण्ड आयोग ने ''सतत विकास के नए विचार'' शीर्षक से अपने प्रतिवेदन में ''सतत विकास को पर्यावरण और विकास की एकता'' के रूप में परिभाषित किया। स्पष्ट रूप से कहा कि हम पर्यावरण को विकास के सहसम्बन्ध में और विकास को पर्यावरण के सहसम्बन्ध में ही समझ सकते हैं।

ब्रंटलैण्ड आयोग ने ''पर्यावरण के सन्दर्भ'' में पश्चिम के परंपरागत विचारों से आगे बढ़ते हुए, वैचारिक दर्शन, सामाजिक व राजनीतिक वातावरण तथा परिस्थितियों को भी पर्यावरण संरक्षण हेतु अपरिहार्य घोषित किया। ''मानव जाति का साझा भविष्य'' नामक अपने घोषणा पत्र में ब्रंटलैण्ड आयोग ने कहा कि सतत विकास विकास का एक ऐसा प्रकार है जो भविष्य की पीढ़ीयों की आवश्यकता पूर्ति के साथ कोई समझौता किए बिना हमारी वर्तमान आवश्यकताओं को पूर्ण करता है। ब्रंटलैण्ड आयोग की सतत विकास की दो प्रमुख अवधारणाएं है –

आवश्यकता की अवधारणा :– यह अवधारणा विश्व के सर्वाधिक निर्धन मनुष्यों की अनिवार्य आवश्यकताओं से सम्बन्धित हैं, जिसे सर्वोपरि प्राथमिकता प्रदान की जानी चाहिए अर्थात उपयोग के प्रति दृष्टिकोण में सुधार तथा उसकी सतत विकास की दूसरी अवधारणा ''विचारों की सीमा'' है, जिसे प्रौद्योगिकी की स्थिति एवं पर्यावरण योग्यताओं के साथ ही लागू किया जा सकता है। हम सभी जानते हैं कि मानव मूलतः विचारशील प्राणी है और मानव का विचार ही अंततः उसके कर्म का आधार होता है। ऐसे में परिस्थितिकी मित्र (इको फ्रेंडली) दर्शन को अंगीभूत किये जाने की आवश्यकता है। यहां मैं रेखांकित करना चाहूँगी कि भारतीय दर्शन सदैव से ''मानव और उसके इहलौकिक परिवेश'' तथा उसके ''पराभौतिक परिवेश'' के मध्य संतुलन स्थापना का पक्षधर रहा है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 6, June 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

अपितु भारतीय दर्शन घोषित करता रहा है कि ''प्रकृति रक्षित रक्षिता'' अर्थात प्रकृति हमारी रक्षा करती है, यदि हम उसकी रक्षा करें।[7]

समकालिक विश्व में ऐसे विचार पश्चिम में प्रायः नहीं रहे, जबकि भारतीय दर्शन ''पर्यावरण संरक्षण और प्रकृति के प्रति प्रेम'' के मूल विचार पर ही आधारित रहा है। वस्तुतः भारतीय दर्शन का पर्यावरण पक्ष जितना अधिक समृद्ध रहा है, वह अन्य राष्ट्र के दर्शन में नहीं है। भारतीय दर्शन की सर्वाधिक महत्वपूर्ण विशिष्टता यह थी कि –''भारतीय चिन्तन ने मानव को प्रकृति का ही अभिन्न अंश स्वीकार किया।'' पश्चिम की भांति न तो स्वयं को प्रकृति से पृथक माना और न ही 'प्रकृति पर विजय' जैसे उद्घोष उच्चारित किये। अपितु भारतीय दर्शन ने तो अपने चरम रूप में उपनिषदों में उद्घोषित किया 'ब्रहम एवं इदं सर्वम्' अर्थात ब्रहम ही यह सम्पूर्ण विश्व है।[8]

भारत के इतिहास के आरम्भिक रूप में जैसे सिन्धु घाटी की मातृदेवी हो या आदि शिव के रूपाकार देवता की प्रतिमा हो, या फिर वैदिक ऋषियों द्वारा अपनी रचनाओं में प्रकृति पूजा की प्रवृति रही हो, जो सुप्रसिद्ध गायत्री मंत्र के रूप में ''सवितृ'' अर्था सूर्य देव के प्रति उपासना के रू‍प में व्यक्त हुई। या जल स्त्रोतों और नदियों के प्रति पवित्रता की मनोदशा में विकसित हुई हो। यहां यह देखना अत्याधिक रूचिकर होगा कि 'आरण्यक' (जिसका अर्थ अरण्य यानि वन से सम्बन्धित) सुप्रसिद्ध भारतीय वैदिक वाग्मय का अत्याधिक महत्वपूर्ण अंग है।[9] महान भारतीय ग्रंथ गीता में श्रीकृष्ण स्वयं को एक वृक्ष (पीपल) घोषित करते हुए कहते है कि मैं वृक्षों में भी मैं हूँ,[10] महाकाव्यों में माँ पार्वती हिमालय (एक पर्वत) की पुत्री घोषित की गयी।[11] विष्णु पुराण में श्री लक्ष्मी समुद्र पुत्री है[12]। गुप्तकाल में सुप्रसिद्ध कवि कालिदास मेघदूत में अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति हेतु ''मेघ को'' एक संदेश वाहक के रूप में देखते हैं। इसके उपरान्त भी इसमें निरंतरता बनी रही।

मध्य युग में भक्ति काव्य में मानव और मानवेत्तर पर्यावरण दोनों के प्रति अत्यन्त भावप्रेरण दृष्टिकोण अपनाया गया था।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 6, June 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

इस प्रकार भारत का सदैव सम्पूर्ण विश्व को यह सन्देश रहा, मानव को पर्यावरण के प्रति मैत्री व सद्भाव का दृष्टिकोण रखते हुए ''विकास'' करना होगा। पश्चिम द्वारा औद्योगिक क्रान्ति के उपरान्त प्रकृति और पर्यावरण का लगभग शत्रुतापरक दोहन पर आधारित दृष्टिकोण अपनाया गया है। जिन्होंने सम्पूर्ण वैश्विक परिदृश्य में पर्यावरण जन्य अनेक चुनौतियां उत्पन्न कर दी हैं। जिन्होंने मानव और मानवता का भविष्य खतरे में पड़ गया है।

इन परिस्थितियों में सम्पूर्ण विश्व को भारत के संदेश ''प्रकृति और पर्यावरण के प्रति श्रृद्धा एवं कृतज्ञता का भाव'' को अपनाकर पर्यावरण संरक्षण के मूल्यों, स्थायित्व के भाव वाली जीवन शैली तथा हरित विकास माडल पर आधारित नीतियों का निर्माण करना चाहिए।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 6, June 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

सन्दर्भ

1. जार्ज थामस व्हाईट पैट्रिक – दर्शन शास्त्र का परिचय, हरियाणा साहित्य अकादमी– 1992, चंडीगढ़, पृ0 3
2. मंथन (पाक्षिक पत्र) इलाहाबाद पर्यावरण व परिस्थितिकी पर आलेख, मार्च 2018, पृ0 8–25
3. दैनिक जागरण 1 मार्च 2020, मेरठ में पदमश्री प्राप्त पर्यावरण विद् डा0 अनिल प्रकाश जोशी का आलेख
4. दैनिक जागरण 1 मार्च 2020, मेरठ।
5. दैनिक जागरण– वही
6. ब्रँटलैण्ड आयोग – वर्ल्ड कमीशन आन एनवायरमेंट एण्ड डेवलेपमेंट वर्ष 1972 ई0 में मानव पर्यावरण पर स्टाकहोम सम्मेलन तथा 1980 ई0 की अंतर्राष्ट्रीय प्रकृति संरक्षण संघ की संस्तुतियों के सन्दर्भ में सतत विकास की आवश्यकताओं के प्रति जागरूकता के प्रसार हेतु संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा गठित
7. भारतीय दर्शन शब्द कोष, जयपुर, 2011 प्रस्तावना
8. एस0एन0 दास गुप्ता – भारतीय दर्शन का इतिहास भाग 1 राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर, 2011, पृ0 12–16
9. एस0एन0 दास गुप्ता – भारतीय दर्शन का इतिहास भाग 1, पृ0 13
10. श्रीमद् भगवद गीता – अध्याय 10 श्लोक 21, डा0 राधा कृष्णन सरस्वती प्रकाशन, दिल्ली, पृ0 237
11. श्री शिव पुराण रूद्र संहिता, गीता प्रेस गोरखपुर, पृ0 220 से 230
12. श्री विष्णु पुराण – गीता प्रेस गोरखपुर, संवत 2065, पृ0 25 – 27

13-